द्वितीय वार्षिक तेरापंथ प्रोफेशनल स मेलन स पन्न

विश्व समस्याओं का समाधान है अनेकांत : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं क्ष्‍ नव बर।

आज का व्यक्ति विद्यार्जन अर्थ के लक्ष्य को ध्यान में रखकर करता है। इसी कारण दर्शन से उसका संबंध कट सा गया है। जीवन कोरा जीवन रह गया है, जीवन दर्शन नहीं किंतु व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत, सामाजिक या व्यवसायिक समस्याओं को समाहित करना है तो उसे दर्शन को अपनाना ही होगा। जैन दर्शन का महत्वपूर्ण सिद्धांत है अनेकांतवाद। सत्य विशाल है और एक व्यक्ति को उसे पूर्ण रूप से समझना असंभव है। अनेकांत का सिद्धांत व्यक्ति को खुद के साथ दूसरों के विचारों को समझने और ग्रहण करने की क्षमता विकसित करता है। अगर व्यक्ति अनेकांत को ग्रहण कर ले तो सभी समस्याओं का समाधान संभव है वह सरल भी है।

ये विचार आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में द्वितीय वार्षिक तेरापंथ प्रोफेशनल्स स मेलन के दूसरे दिन समापन सत्र में प्रकट किये।

आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रोफेशनल्स को मार्गदर्शन देते हुए यह अपेक्षा की प्रोफेशनल्स की अपने प्रोफेशनल्स के साथ साथ जैन दर्शन, जीवन विज्ञान आदि प्रवृत्तियों को प्रभावी रूप से समाज के प्रबुद्ध वर्ग व राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करे। साथ ही जैन जीवन शैली, अहिंसा प्रशिक्षण, प्रेक्षाध्यान आदि के प्रति भी अपनी प्रतिबद्धता रखें।

समापन सत्र को मंगल उद्‌बोधन देते हुए युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि किसी भी नये कार्य के लिए दो सूत्र आवश्यक है - उत्साह और साहस। दोनों के समन्वय से ही उत्कृष्ट परिणिती सामने आती है। प्रोफेशनल को जीवन सूत्र देते हुए महाश्रमणजी ने फरमाया कि बुद्धि के साथ शुद्धि भी आवश्यक है। ऐसा प्रयत्न होना चाहिए कि शुद्धि की प्रक्रिया भी साथ चलती रहे।

कार्यक्रम का प्रारंभ युवाचार्यश्री महाश्रमण के मंगल संगान से हुआ। कार्यक्रम से पूर्व स्थानीय तेरापंथ कन्यामण्डल ने सामुहित मंगल संगान प्रस्तुत किया।

समापन सत्र में सभी संभागियों ने समर्पण व निष्ठा के साथ अपने दायित्व को निभाने का संकल्प किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री सलील लोढा व आभार ज्ञापन श्री नरेन्द्र श्यामसुखा ने किया।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के स्टॉफ □वार्टर्स शिला न्यास समारोह का अवसर

भवन की भव्यता के साथ दिव्यता आवश्यक : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं ।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के स्टॉफ □वार्टस भवन शिलान्यास समारोह का आयोजन युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में नवनिर्मित महिला छात्रावास के पास में दिनांक क्ष नव बर को हुआ। समारोह के प्रारंभ में युवाचार्य श्री महाश्रमण ने मंगलपाठ सुनाये तथा इस अवसर पर उन्होंने कहा कि कोई भी भवन भव्यता के साथ दिव्यता से युक्त होना चाहिए। भवन का बाह्य सौन्दर्य जहां उसे भव्य बनाता है वहीं ज्ञान और आचार के लिए उसका उपयोग उसे दिव्य बनाता है। अत: भवन भव्य के साथ-साथ दिव्य भी होना चाहिए।

भवन का शिलान्यास कलकŽा के जाने-माने उद्योगपति, समाजसेवी भंवरलाल घोड़ावत के कम कमलों से हुआ। विश्वविद्यालय के वितीय सलाहकार धनराज बैद ने जैन विधि से तथा स्थानीय पण्डित ने सनातन विधि से शिलान्यास का स पूर्ण कार्यक्रम स पन्न किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा ने कहा कि विश्वविद्यालय दिन-प्रतिदिन विकास की ओर अग्रसर है। विद्यार्थियों की सं या की वृद्धि €े साथ-साथ स्टॉफ के सदस्यों की वृद्धि स्वाभाविका है। अत: स्टॉफ के सदस्यों के आवास हेतु भवन की आवश्यकता की पूर्ति हेतु इस भवन का निर्माण होने जा रहा है। इस भवन के निर्माण में यु.जी.सी. के सहयोग के साथ-साथ समाज के उदारमना, महामना व्यक्तित्व का सहयोग भी अपेक्षित रहेगा। कुलपति ने समाज के भामाशाह एवं महिला छात्रावास के निर्माण में महत्वपूर्ण सहयोग देने वाले भंवरलाल घोड़ावत की तारीफ की। समारोह के अंत में निर्विघ्न भवन निर्माण की स पन्नता हेतु कुलपति ने मंगल पाठ का उच्चारण किया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा, उपनिदेशक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, ताराचंद रामपुरिया, विताधिकारी राकेश कुमार जैन सहायक कुलसचिव अमित राठौड़ आदि शिक्षकों, अधिकारियों, स्टाफ के सदस्यों एवं विद्यार्थियों के साथ नगर के गणमान्य पूर्व नगर अध्यक्ष बच्छराज नाहटा, आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष भागचंद बरड़िया, रणजीत बैद , प्रकाश बैद, रतनलाल चौपड़ा आदि उपस्थित थे।